आनी और पेड़ों से चिपकने वाले

लेखनः जेनीन एटकिन्स, चित्रः वैनेन्टियस पिन्टो
भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

जेनीन एटकिन्स *गेट सैट स्विम* की लेखिका हैं, जिसे कोआपरेटिव चिल्ड्रन्स् बुक सेंटर ने एक चयनित पुस्तक का दर्जा दिया था। वे मैसाच्युसैटस् में अपने पति व बेटियों के साथ रहती हैं।

वैनेन्टियस पिन्टो का जन्म मुम्बई, भारत में हुआ था। वे चित्रकार, डिज़ाइनर व एनिमेटर हैं। पिन्टो अपनी पत्नी के साथ न्यू यॉर्क में रहते हैं। यह उनके द्वारा चित्रित पहली किताब है।

आनी और पेड़ों से चिपकने वाले

लेखनः जेनीन एटकिन्स

चित्रः वैनेन्टियस पिन्टो

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

आनी ने इकट्ठा किए बदामों से भरी अपनी टोकरी नीचे धरी और अपने पसंदीदा पेड़ के नीचे बैठ गई। हर दिन, कम से कम एक बार वह शुकराने से भर उस पेड़ के खुरदुरे तने की टेक लगा कर बैठ जाती थी। वहाँ बैठ वह ऐसे दिवास्वप्न देख सकती थी जो उसके अपने भीड़-भाड़ भरे घर में समा ही नहीं सकते थे। घर में रोते शिशुओं, शिकायत करते दादा जी, और गप्प लड़ाती बहनों के शोर में आनी अपने ख़यालों को सुन तक नहीं पाती थी।
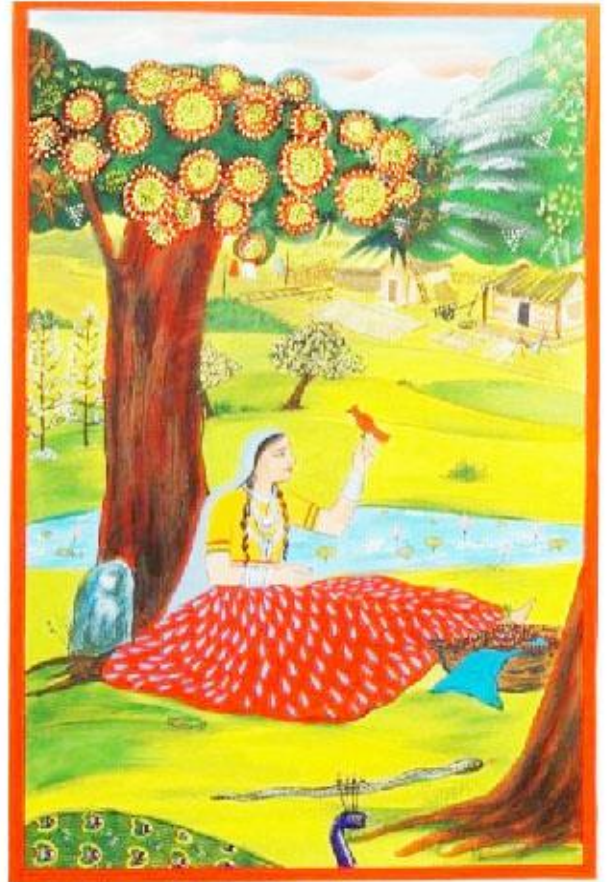
आनी ने एक लाल बेरी को पिचकाया ताकि अपने कपाल पर ठीक अपनी माँ जैसा टीका लगा सके। वह घास से पाजेबें बना रही थी, चान्दी की वैसी पाजबों और चूड़ियों-सी, जैसी शादीशुदा औरतें पहना करती हैं। अचानक उसने दूर कहीं गड़गड़ाहट और गर्जना सुनी। वह आवाज़ कुछ ऐसी लग रही थी मानो कोई शेर गुस्से में गुर्रा रहा हो। वह आवाज़ बर्फ से ढ़की पहाड़ियों पर बादलों की तूफ़ानी कड़क से भी तेज़ थी। आनी ने हिमालय की ओर देखा, पर वह आवाज़ देवताओं के बर्फीले आवास से नहीं आ रही थी।
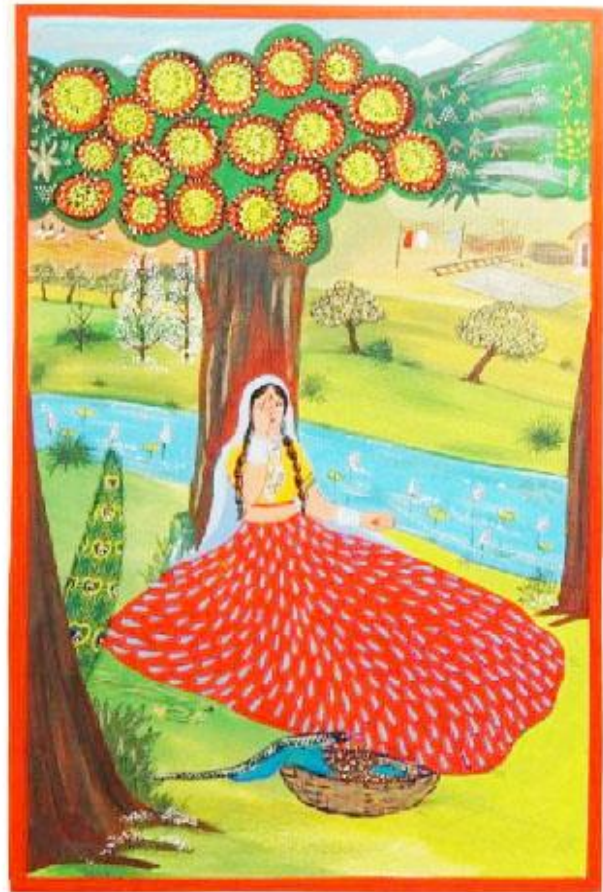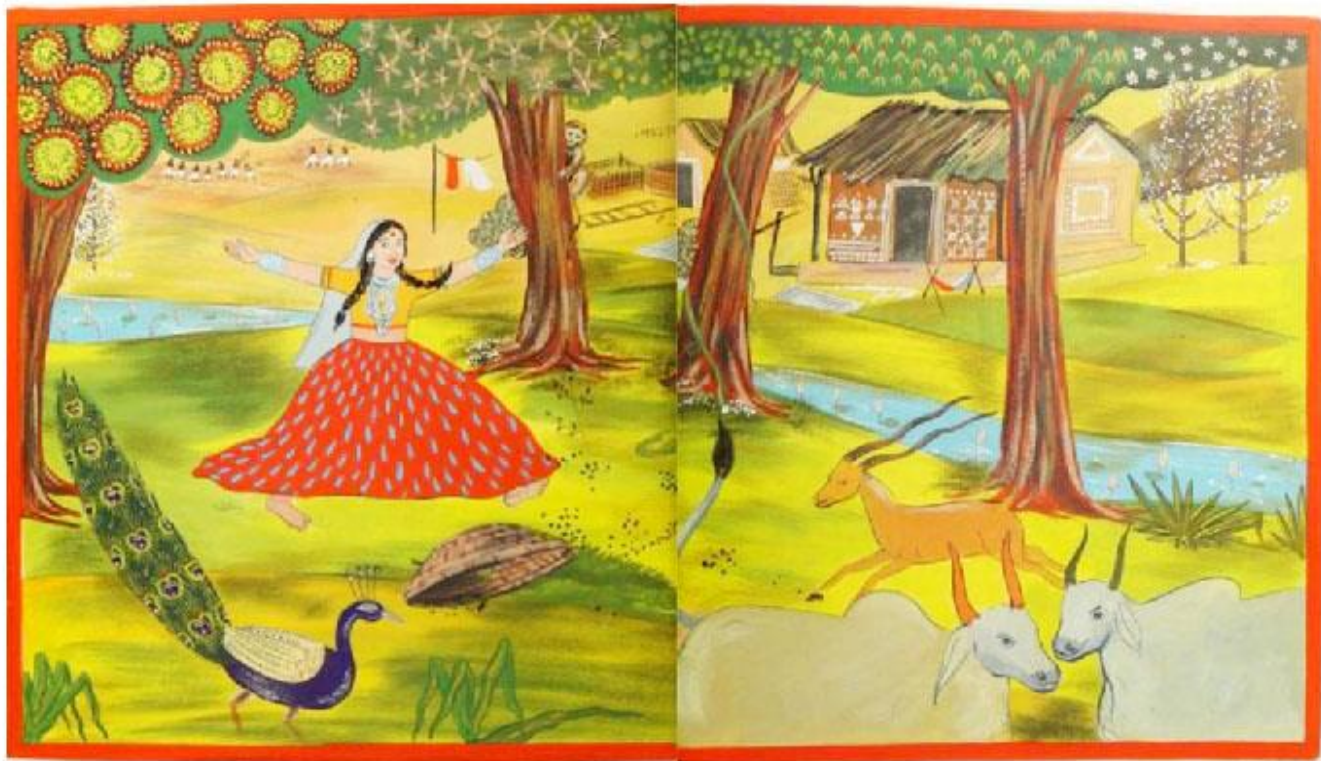
जैसे-जैसे वह घिसर-पिसर की सी आवाज़ें तेज़ होने लगीं आनी उछल कर उठ खड़ी हुई। वह अपने घर की ओर दौड़ी, और हड़बड़ी में उसकी बादामों से भरी टोकरी उलट गई।

आनी की माँ न तो घर पर थी, ना बाहर आँगन में। उसके पिता और परिवार के दूसरे पुरुष दूर खेतों में चावल की फसल काटने गए हुए थे।

आनी नदी की ओर भागी, उसने माँ को घड़े में पानी भरते पाया।

“माँ! क्या तुम्हें वह शोरगुल सुनाई दे रहा है?” आनी ने घबराते हुए पूछा।

माँ ने अपना घड़ा नीचे रखा और ध्यान से सुनने लगी। पास वाली औरत ने अपनी साड़ी को पानी में पछारना बन्द किया। कुछ औरतें, जिनके पीठ पर बच्चे उछल रहे थे, वे भी पास आ गईं।

आनी की माँ ने पेड़ों के बीच उठते धुंए के परे देखा। "यह तो ट्रक है," माँ ने आनी से कहा। "बड़ी-सी तेज़ चलने वाली गाड़ी।"

दूसरी औरतें भी अब तक पास आ चुकी थीं।

"जैसा जंगल-धावकों से सुना था, वही हो रहा है," कलावती ने कहा। सब मुड़ कर उसकी बात सुनने लगे। कलावती को सब मान देते थे, वह गाँव की सबसे बड़ी-बुज़ुर्ग जो थी। "शहर के लोग हमारा जंगल छीनने आ गए हैं।

आनी की माँ की भौं चिन्ता में सिकुड़ गई। "पर जंगल तो हमेशा से यहाँ ही रहा है। हमारे लोग भी हमेशा से यहीं रहते आए हैं।"

"शहर के लोग कहेंगे कि जंगल के हम मालिक नहीं हैं। हमारे पास मालिकाना सिद्ध करने के कागज़ जो नहीं हैं," कलावती ने जवाब में कहा। "यही उन्होंने दूसरे गाँव में भी कहा था।"

गड़गड़ाहट बन्द हो चुकी थी। आनी ने अपनी साड़ी ऊपर की, और उस जगह दौड़ी जो अब सन्नाटे में बदल चुकी थी। वह चावल के खेतों के पार दौड़ी, जहाँ पुरुष पीठ पर कटे चावल ढ़ो रहे थे, मानो सुनहले लबादे पहने हों। आनी की माँ और दूसरी स्त्रियों ने अपनी टोकरियाँ और घड़े नीचे पटके और आनी के पीछे भागीं। उनकी चाँदी की पाजेबें और चूड़ियाँ खनखना उठीं।

वे तब रुकीं जब सामने ट्रक दिखने लगा। कई पुरुष अपने कुल्हाड़े पेड़ों पर चला रहे थे। एक के हाथ में तो स्टील से बनी आरा-मशीन भी थी।
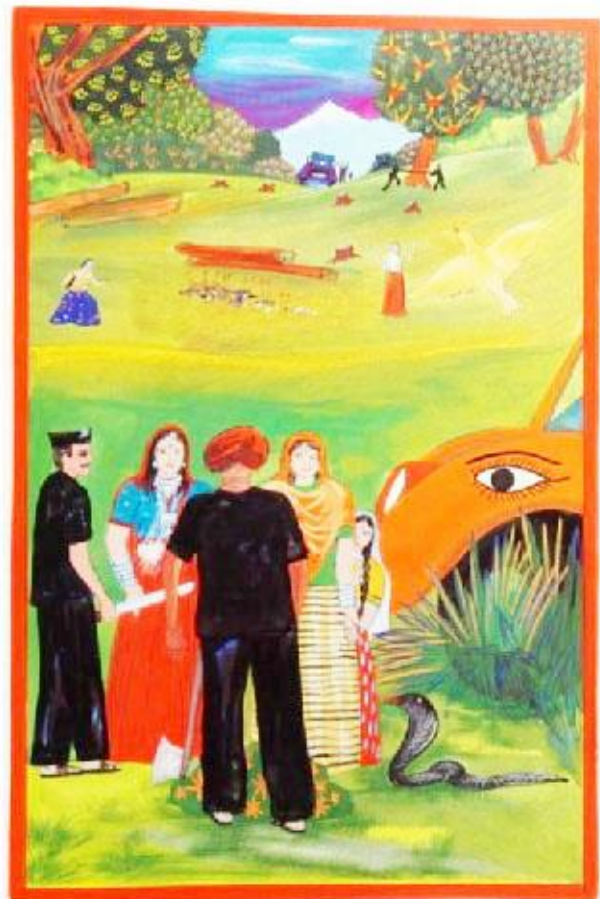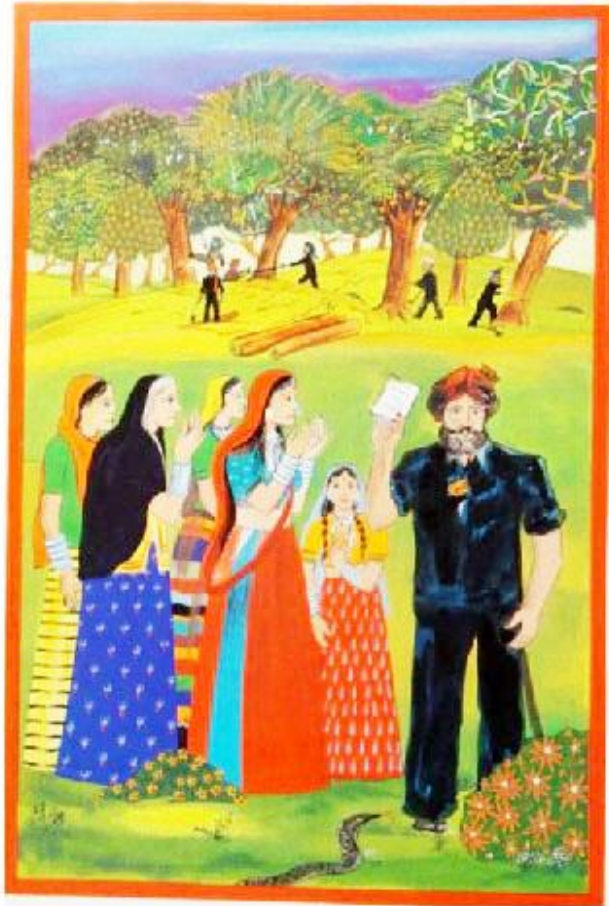
"नमस्ते!" आनी और स्त्रियों ने हाथ जोड़, सिर झुका कर कहा। आस-पास कई पुरुष अपनी रुपहली कुल्हाड़ियाँ छोटे पेड़ों पर चला रहे थे। धातु के वार से पहले तो पेड़ों की छाल कटी। तब पेड़ों के वे घाव गहरे हो चले। एक ने पेड़ को धक्का दिया। पेड़ धड़ाम से धरती पर आ गिरा। आनी की माँ ने अपनी चीख रोकने के लिए हाथों से मुँह बन्द किया।
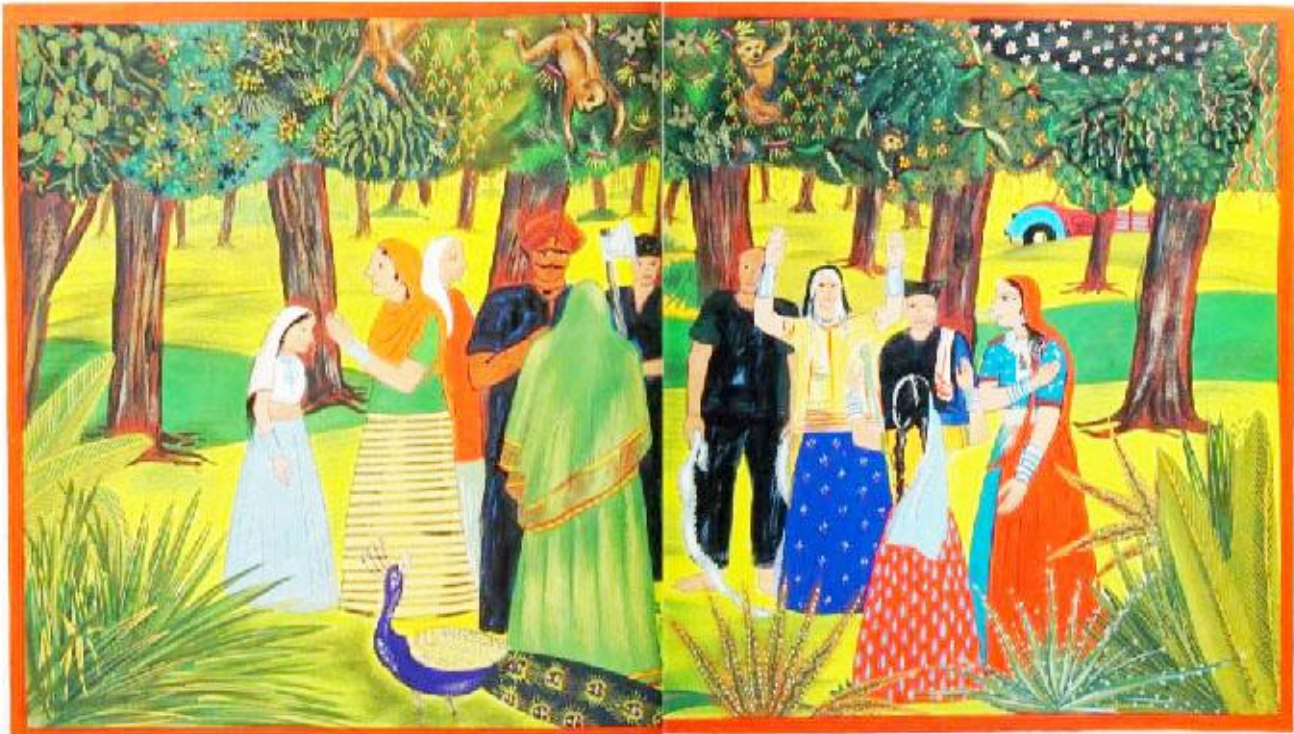
''रुको!'' कलावती चीखी।

एक आदमी ने अपनी आरा मशीन शुरू कर दी। उसकी आवाज़ तीखी और तेज़ थी। पर कलावती और ज़ोर बोली। “ये पेड़ हमें फल और बेरियाँ देते हैं।

जंगल के पेड़ों से हमारे घर, हमारे हल और कुदाल बनते हैं। इनकी जड़ें हमारी मिट्टी को तेज़ हवाओं और बरसात से पहाड़ से नीचे बह जाने से बचाती हैं।''

पर शहर से आए पुरुष अपनी कुल्हाड़ियाँ चलाते रहे। हिलती और कट कर गिरती शाखाओं ने आनी को हवा दिखाई और हवा ने उसे रूहों के दर्शन करवाए। एक आदमी ने अपनी कुल्हाडी से पेड़ को छुआ ही था कि पेड़ चरमरा कर धरती पर आ गिरा। कलावती उसकी ओर दौड़ी।

कलावती ने उसकी कुल्हाड़ी को पकड़ लिया। आदमी ने कलावती को धक्का मारा, वह लड़खड़ा कर नीचे गिरी।

"रास्ते से हटो।" आदमी ने डपट कर कहा।

"इनकी लकड़ियाँ हमारे चूल्हों को जलाती हैं," कलावती बोल पड़ी। "हमें अपना खाना पकाने और और अपने घरों को गरम रखने के लिए इनकी ज़रूरत है।"

एक दूसरे आदमी ने दूर से एक कागज़ हिलाया। "हमारे पास हुक्मनामा है।"
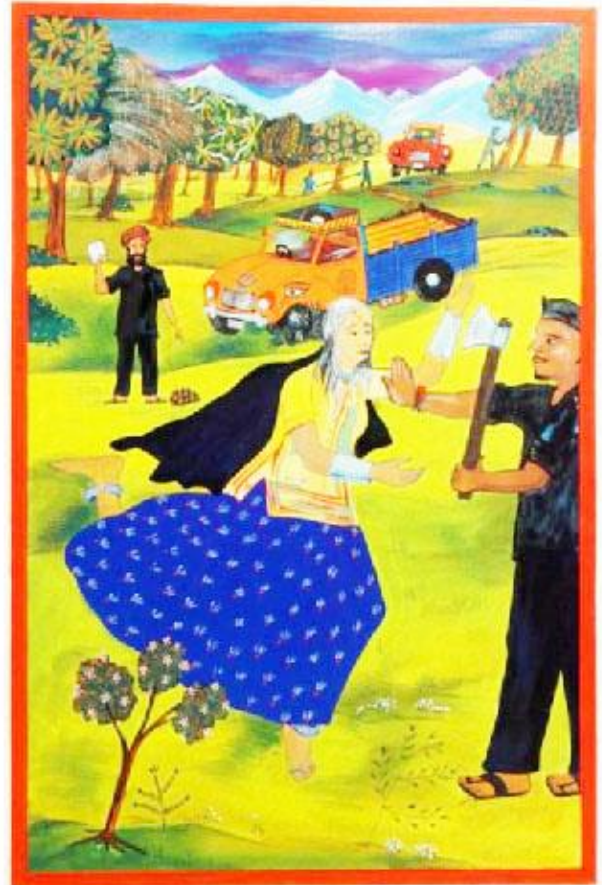
''आप अब तक जितने पेड़ काट चुके हो, उतने हम साल भर में भी नहीं काटते,'' कलावती ने कहा। ''इन पेड़ों पर पशु-पक्षी रहते हैं। वे भला कहाँ जाएंगे?''

कुल्हाड़ी पकड़े एक आदमी कलावती को धकियाते आगे बढ़ा। वह आनी की बादामों वाली टोकरी के पास से गुज़रते हुए उस पेड़ के पास गया, जिसके नीचे आनी रोज़ाना बैठा करती थी। आनी पेड़ के पास दौड़ी।

''लौट आओ!'' आनी की माँ डर कर चीखी।

आनी ने अपने हाथों से पेड़ को घेरा और उससे चिपक गई। उस आदमी की कुल्हाड़ी आनी के पीठ पर थी। उसी कुल्हाड़ी ने पेड़ की छाल को कितनी आसानी से चीर दिया था।
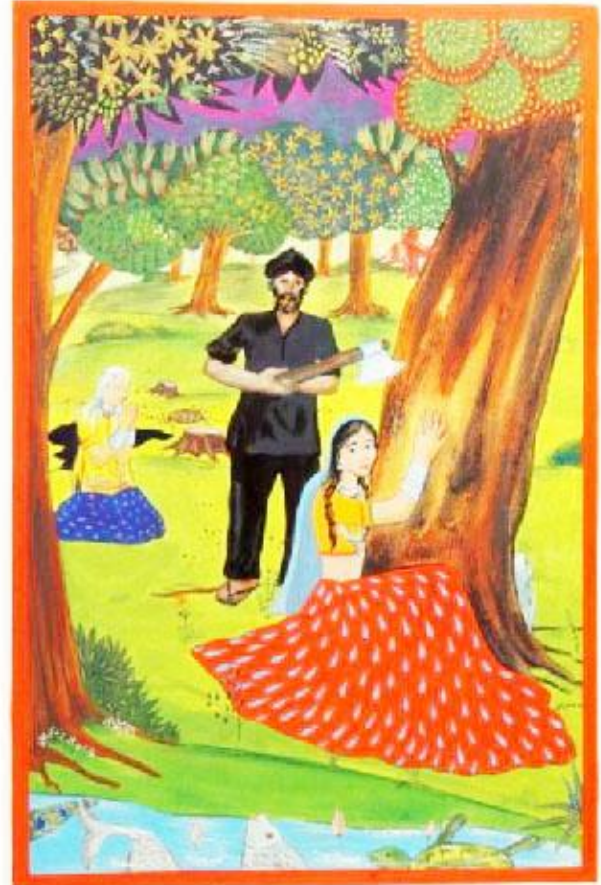
“आनी!” उसकी माँ चीखी।

आनी को उस चीख में अपनी माँ का डर सुनाई दिया। पर वह पेड़ से और ज़ोर से चिपक गई, ताकि उसके और पेड़ के बीच कोई आ न सके। पेड़ की खाल ने उसके गाल को छील दिया। पर आनी ने कुछ न देखा, जब तक कि कुल्हाड़ों की आवाज़ें बन्द न हो गईं। हवा पेड़ के इर्द-गिर्द बही और उसकी पत्तियाँ धीमे से सरसराने और गुनगुनाने लगीं। आनी ने आँखें उठा कर देखा कि उसके आस-पास कई औरतें और बच्चे भी पेड़ों से लिपट-चिपक गए हैं।
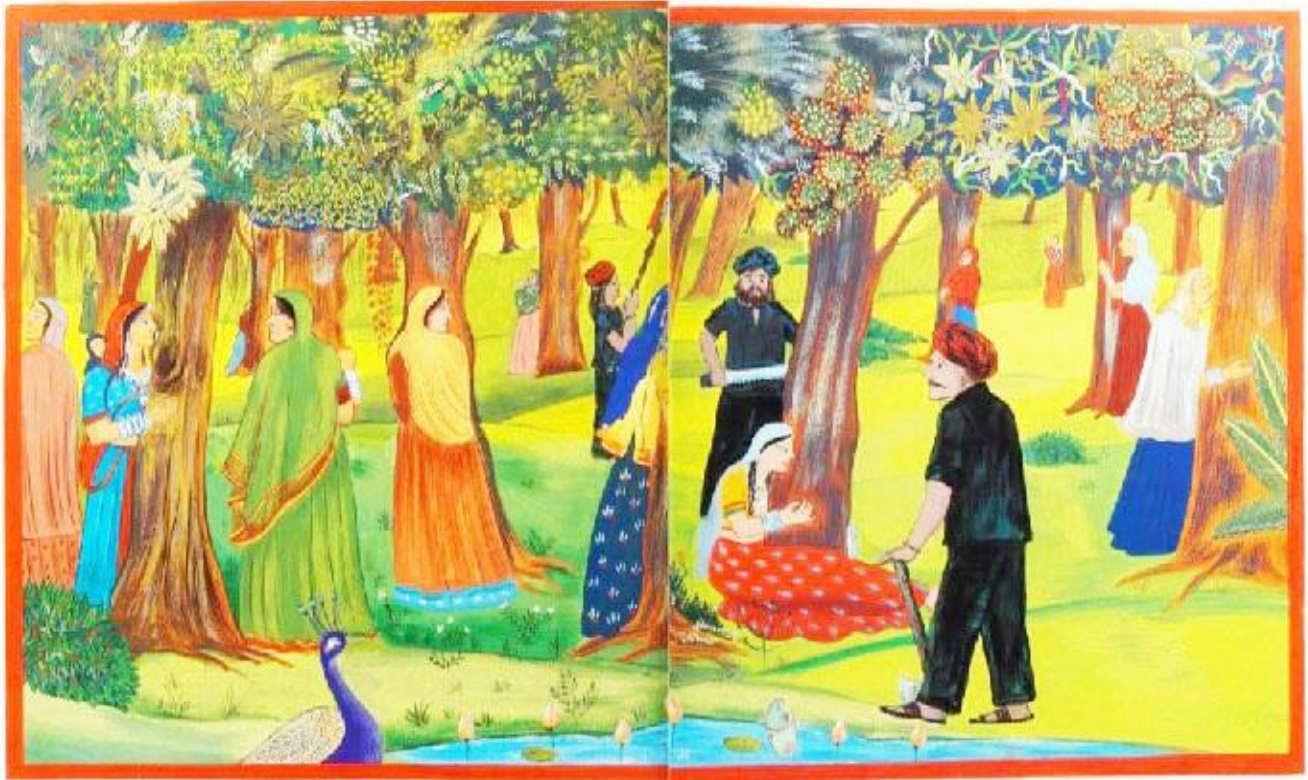
औरतें के माथे पर लगे लाल टीकों ने जंगल में उजास भर दी। शहर से आए पुरुष अपनी कुल्हाड़ियाँ नीचे रख आपस में कुछ फुसफुसा रहे थे।

तब उनमें से एक ने कहा, ''आप लोग घर लौट जाओ।''

''यही हमारा घर है,'' कलावती ने जवाब में कहा।

''हम आपको चले जाने के लिए हज़ार रुपए देंगे,'' आदमी ने लालच दिया।

आनी सोचने लगी कि हज़ार रुपयों से क्या-क्या ख़रीदा जा सकता है। एक बकरी, ताकि उन्हें पीठ पर जलावन न ढ़ोना पड़े। उससे नई दरांतियाँ ख़रीदी जा सकती हैं जिनसे चावल की फसल आसानी से काटी जा सके। और इतनी चीनी और चाय पत्ती कि सालों तक चाय पी सकें।

''नहीं,'' कलावती ने कहा। " हमें रुपए नहीं चाहिएं, हमें हमारे पेड़ चाहिए।''

आनी और बाकी लोग पेड़ों से और कस कर चिपक गए। आनी तब तक हिली नहीं जब तक उसने ट्रकों के लौटने की आवाज़ न सुन ली, जो पहले ज़ोर से तब धीमी पडती गई। पत्तों की सरसराहट और टहनियों की खड़खड़ाहट ने जंगल को अपने ही संगीत से भर दिया।

आनी के हाथ पेड़ से अलग हुए।

''नमस्ते!'' उन्होंने हर आने और लौट जाने वाले को शान्ति की दुआ दी।

"तुम आख़िर कर क्या रही थी?" आनी की माँ ने पूछा। "मैं तो उस पल बेहद डर गई थी।"

"डर तो मुझे भी लग रहा था माँ," आनी ने जवाब दिया।

कलावती नाचने लगी। एक औरत ने अपने बच्चे को खुशी से उछाला। पाखी एक से दूसरे पेड़ पर उड़ने लगे। आनी ने पर्वत की विशाल चोटियों की ओर देखा, और दुनिया व धरती माता के लिए प्रार्थना की। पेड़ अब सुरक्षित थे। हर कोई सुरक्षित था।

लेखिका की कलम से

यह कहानी 1970 के दशक में उत्तर भारत की असली घटनाओं पर आधारित है। चिपको आन्दोलन की स्त्रियाँ अपने संघर्ष में सफल रहीं। अब वहाँ की अधिकांश पंचायतें खुद यह तय करती हैं कि कितने पेड़ काटे जाएंगे, ताकि वहाँ की धरती और उसके बाशिन्दे महफ़ूज़ रहें। और बसन्त में नए पेड़ रोपे जाते हैं।

चित्रकार की कलम से

इन चित्रों की प्रेरणा उत्तर भारत की लघुचित्र की विभिन्न शैलियों - बाशोली, बिलासपुर, देवगढ़, कांगड़ा व पहाड़ी - से मिली है। उस समय के भारतीय लघुचित्र, पश्चिमी चित्रकला के प्रभाव से पहले की शैली व परिदृश्यों में मानव आकृतियों को अक्सर पार्श्वचित्र (प्रोफाइल) में दर्शाया करते थे। मैंने अलग-अलग शैलियों के पक्षों को ले, चिपको आन्दोलन की महिलाओं को 'शक्ति' के रूप में और उत्तर भारत में आनी जैसे लोगें के साहस से बचे पेड़ों को दर्शाया है।

पुस्तक के पन्नों में हाशिए पर जो दो रेखाएं व एक बिन्दु है, वह भारतीय आध्यात्मिक पाण्डुलिपियों में देखे जा सकते हैं। बिन्दु हम सबमें जो आन्तरिक गवाह मौजूद होता है उसका प्रतीक है। यह तृतीय नेत्र के अनेक प्रतीकों में एक है जो व्यक्ति के अस्तित्व के अंतरतम की खिड़की है, जिसकी ओर हम हमेशा जवाबों की तलाश में मुड़ते हैं।